

बोधराज सीकरी की हनुमान चालीसा की मुहिम



पंजाब केसरी
ई-पेपर

EDITIONS ▼
Gurgaon
Kesari

4/4



प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

गुड़गांव, 18 मई (ब्यूरो): स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी के आग्रह पर हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम के परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई।

हनुमान चालीसा का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति



हनुमान चालीसा के पाठ कार्यक्रम में मौजूद बोधराज सीकरी व अन्य।

को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो

जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान

चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाईं जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें।

गजेंद्र गोसाईं ने अपने मुखारबिंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरान्त अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारबिंद से गाए और उसमें लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे।

छोटीबड़ीबात

आज ही के दिन 1934 में अयोजी
राज के प्रसिद्ध अस्त्रवेद्य लेखकों
में से एक स्वदेशी संघ का
जन्म हुआ था।



सबसे पहले
लेखक का
पता देना
होता है।

dailybhaskar.com

दैनिक भास्कर

देश का विश्वस्तरीय अखबार

बिना | 100-42 | 300-120 | 100-100 | 100-100 | 100-100

झांसी, गोरख, लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित



प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

भास्कर ब्यूरो

गुरुग्राम। बुधवार को स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जेकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी



जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन

किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेन्द्र गोसाईं जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें। उसके उपरांत बोधराज सीकरी से कहा गया कि वे समापन की और आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में स्वामी जी का जहां एक और आभार प्रकट किया।

गुड़गांव दुडे

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

- बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई।
- परम श्रद्धेय स्वामी विद्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद।

गुड़गांव दुडे, गुरुग्राम

स्वामी दिव्यानंद महाराज के पवन और चक्र आश्रम जोकि ज्योति पाक गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसे आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ को मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से जींचित रह गए हैं और जो अने वाले अतीम दिन वाली सारंग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएं व

पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले जो एक बंट स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की रांग में बुककी लग गई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को बिज्जसा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्शन को तरह होना चाहिए ताकि उसके दर्शन अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ों होती है। व्यक्ति को समयक श्रोगा बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अपरध बोध के दर्शन होते हैं।

महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि व्यक्ति को जब किसी भी कथा या आयोजन में सम्मिलित होना हो तो ना केवल जो सुने बल्कि उस विषय का अभ्यसन करें, स्वाभ्यसन करें, समीक्षा करें, संयन करें और फिर विंशन करें।



इस प्रकार जो विषय उसके मन के पटल पर बंट जाएगा। महाराज जी ने हनुमान चालीसा के ऐसे-ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गावन

किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गौरी गोसाईं को निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने गुर और स्वर्ग का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा

का पाठ करें। गौरी गोसाईं ने अपने मुखारविंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरान्त अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारविंद से गाए और उसमें श्रोतों को प्रेरित किया कि नृप भी साथ में करेंगे।

आखिरी दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उसमें लगभग 800 साधकों को शामिल किया गया और छडिया के माध्यम से मायकी के माध्यम से साथ में धवन और गुरुदेव के न-नए शब्दों का मिश्रण करके हनुमान चालीसा पाठ के साथ-साथ नृप का दृश्य देखने के लायक था।

उसके उपरांत बोधराज सीकरी से कहा गया कि ये समाप्त की और आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में स्वामी जी का बहुत एक और आधार प्रकट किया क्योंकि उन्होंने लोगों को दो दिन निरंतर हनुमान चालीसा के पाठ का संगीतमय तरीके से पठन करने का अवसर प्रदान किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मण्डल पुरुषोत्तम राम न केवल राक्षसों का

वध करने के लिए बल्कि पयोवरण को संतुलित करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। क्योंकि उन्होंने बहुत ही सुंदर कविता पढ़कर सुनाई जिसमें पूव्वी माँ भगवान विष्णु के पास हाहाकार करती हुई जाती है और राक्षसों के द्वारा किये गए अत्याचार के बारे में बजती है। जो भगवान विष्णु से उन्हें क्या उतर दिया

पूव्वी ए मेरी प्यारी पूव्वी, मैं तेरा ताप मिटाता हूँ (यहां ताप का अभिप्राय रोजबत चार्मिंग से है) पूव्वी ए मेरी प्यारी पूव्वी मैं तेरा ताप मिटाता हूँ। दशरथ के यहाँ राम बनकर अतिशोभ अवध में आता हूँ छ भक्तों अब तुम निश्चिंत रहो अब तुम्हें ना कोई भय होगा। यह धरणी होगी धरा धाम, धरणी धर का अभिनय होगा।

सुन सकते नहीं वन मेरे अत्याधिक पुकार अधीनों को, ये पूव्वी होगी शीर्षों को पूव्वी न होगी हीनों को।

इस प्रकार अपने मन के उद्गार रखे और अंत में वेद के एक मंत्र जो चढ़ करते समय प्रायः 5 बार उच्चारित किया जाता है। इसमें प्रका

और पशु दो शब्दों का वर्णन है। प्रका का अभिप्राय सतान से और पशु का अभिप्राय हमारी गौमाता से है। इस प्रकार उस मंत्र की भी बोधराज सीकरी ने सतुलत व्याख्या करी और अंत में महाराज जी के चरणों में नमस्कार हो उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया। उसके बाद प्रयाद विरित किया गया।

इस कार्यक्रम में धर्मदेव बजाव, न्योत्तना बजाव, रचना बजाव, सति बजाव, रावेत गाथा(प्रधान गीता आश्रम), हरीश संगीतमय, रमेत कुमार, ओ,पो फालत, चंचल, रमेत कामरा, रामलाल शीकर, एच के अरोड़ा, हरविंद कोहली, ओमप्रकाश कपूरिया, चूनी लाल गर्मा, रमेत मुंजाल, झारका दास कक्कड़, पुनीत कपूरिया, नरेंद्र कपूरिया, रावबाल आहूवा, मुभाष शीकर एडवोकेट व अन्य वन उपस्थित रहे।

आठ सौ लोगों ने दस-दस बार पाठ करके आठ हजार का आंकड़ा स्पर्त किया। पाठ की कुल संख्या कल तक 8000 रही। 172600 की पहले की संख्या कल को आठ हजार से मिला कर 100000 को छू गई।

नये भारत का अखबार



गुड़गाव मेल

DAVP, Northern Rly., DIPR Haryana के विज्ञापनों के लिए अधिकृत

हरियाणा के सभी जिलों, चण्डीगढ़ और दिल्ली में प्रसारित

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

भारत, गुड़गाव मेल
गुड़गाव, 18 फरवरी। स्वामी दिव्यानंद महाराज के चरम और परिवार आत्म जौक ज्योतिष चर्क गुड़गाव में संचालित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परमो आग्रह किया कि वे जो हनुमान चालीस के पाठ को सुनिये अपने दुःख को ही दूर कर सकें और बहुत सारे सपने इस आनंद से जागृत हो जाएं और जो आने वाले जीवन दिन खरी सपने का जो पीछा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आसानी व पुनः वह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप आज आत्म में लगभग 800 सपनों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रश्नन का आनंद लिया और आज जो मेल में दुःखी लोगों। उसके उपरंत हनुमान चालीस के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया सपना को विज्ञान होनी चाहिए, सपना का जीवन एक दर्शन को उतार होना चाहिए तब तक उसको दर्शन अपनी सन्धान बना सके।

ज्योतिष को अपने मन को संश्लिष्ट भी मानना होनी चाहिए। किसी ज्योतिष को पूरे ज्योतिष से तुलनात्मक तुलनात्मक से मुकामला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ होती है। ज्योतिष को समझना सीखना चाहिए। उनके अनुसार कथ से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राव दरार के मन को संश्लिष्ट मनुष्य के साथ कथ भी उसके मन के अंतर एक उस दर्शन का दृश्य नजर आ रहा था जब कथ कुमर के माता-पिता ने उन्हें हार दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नेता संश्लिष्ट और सुविचार्य कार्यों को देने में लगे हैं। इस प्रकार को संश्लिष्ट और सुविचार्य मनीष पुरुषोत्तम राम भी दिया करते थे परंतु मनीष पुरुषोत्तम राम उनके साथ संस्कार और कर्तव्यपरतन्त्र भी अपने तारतम्यों को और प्रजा को विज्ञानों में। दुर्भाग्य को बता है कि आज का नेता वे सुविचार्य तो उन्हें दे रहा है परंतु उन्हें संस्कारहीन और कर्तव्यपरतन्त्र निहीन बना रहा है जिसके कारण



नागरिक अज्ञानी बनता है।
महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि ज्योतिष को जब किसी भी कथ या अज्ञेयन में संपर्कित होना ही तो वे केवल को सुनने बल्कि उस विषय का अध्ययन करें, स्थापन करें, समीक्षा करें, मंथन करें और फिर लिखें करें। इस प्रकार जो विषय उसके मन के पटल पर बैठ जाएगा। महाराज जी ने हनुमान

चालीस के ऐसे-ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीस पाठ का संक्षेप तर्क से स्वर्ण मान्य किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गौरी मोहन जी निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीस के पाठ को अपने घर और स्वर्ग का एक नया रूप दे रहे हैं इसके मध्यम से उन्हें कहा कि अब

अपने संश्लिष्ट तर्क से हनुमान चालीस का पठन करें।
गौरी मोहन जी ने अपने मुखारविंद से अपने घर पर कभी से 8 नार संक्षेप तर्क से पठन किया। तबोपरंतु अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारविंद से गए और उनमें लोगों को प्रेरित किया कि नृप भी साथ में करें।

अधिकांश दो हनुमान चालीस पाठ का पठन संश्लिष्ट तर्क से उसमें लगभग 800 सपनों को उजागर किया गया और उजागर के मध्यम से स्वामी के मध्यम से साथ में पठन और सुनने के नए-नए सपनों का विकास करने हनुमान चालीस पाठ के साथ-साथ नृप का दृश्य देखने के लक्ष्य था।
उसके उपरंत बोधराज सीकरी से कहा गया कि वे सम्मान को और आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में बताया जो का जहां एक और आपस प्रकट किया क्योंकि उन्होंने लोगों को दो दिन निरंतर हनुमान चालीस के पाठ का संश्लिष्ट तर्क से पठन करने का अवसर प्रदान किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मनीष पुरुषोत्तम राम व केवल स्वामी का नम करने के लिए बल्कि परतन्त्र को संश्लिष्ट करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। क्योंकि उन्होंने बहुत ही गुरु कविता पढ़कर सुनई जिसमें पृथ्वी में भगवान विष्णु के पद स्थापना करती हुई जाती है और

स्वामी के द्वारा किये गए आचानार के बारे में बताया है। तो भगवान विष्णु से उन्हें क्या उतर दिया :
पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी,
मैं तेरा साथ पिटाता हूँ (वहाँ तारा का अधिपत्य स्थापना करण से है)
पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी मैं तेरा साथ पिटाता हूँ।
दरार के जहाँ राम बनकर अतिशय अल्प में अलग हूँ व भक्तों अब तुम निरंतर रहो अब तुम्हें व कोई धन होगा। वह धरती होगी धरा धाम, धरती पर का अधिपत्य होगा व
सुन सकते नहीं क्या ये आर्थात्मिक पुंजर आसनों को, वे पृथ्वी व होगी हीन को।
इस प्रकार अपने मन के उदार रखे और अंत में वेद के एक मंत्र जो मंत्र करने के लिए बलि परतन्त्र को उन्मार्जित किया जाता है। इसमें प्रजा और पशु दो शब्दों का वर्णन है। प्रजा का अधिपत्य मंडल से और पशु का अधिपत्य हवारी गौरी मोहन से है। इस प्रकार उस मंत्र को भी बोधराज

सीकरी ने सफुलत व्याख्यान करी और अंत में महाराज जी के चरणों में नमस्कार हो उनसे अशीर्वाद ग्रहण किया।
उसके बाद प्रसाद विनियत किया गया।
इस कार्यक्रम में धर्मद बजाव, ज्योतिषना बजाव, रचना बजाव, शक्ति बजाव, गजेश गायन (प्रधान गौरी आत्म), हरीत संगीत, रंगत कुमर, जो पी काला, बंजल, रंगत कपरा, रंगलाल घोष, एच.के. अरोड़ा, हरिंदर बोहली, ओमप्रकाश कपूरिया, पूनी लाल शर्मा, रंगत भुंजल, द्वारा का दाय कन्कड़, पुनीत कपूरिया, नरेंद्र कपूरिया, राजलाल अहूजा, मुषण शौर एडवोकेट व अन्य जन उपस्थित रहे।
अंत और लोगों ने राम-दस बार पाठ करके अंत हनुमान का अर्घ्यार्पण करवाया। पाठ को कुल संज्ञा कुल एक 8000 रही। 172600 को पहले को संज्ञा कुल को अंत हनुमान से मिला कर 180000 को रूँ था।

बुलंद खोज

सम्पादक-संजय सार्यक

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार-पत्र

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई।

गीताज्ञानेश्वर स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद
प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज बोधराज सीकरी

गुरुग्राम, बुलंद खोज / लोकेश कुमार। गीता ज्ञानेश्वर स्वामी दिव्यानंद महाराज के पवन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ को मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएं व पुन यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कुल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा हेतु चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम हेतु चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दुर्दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। उनके अनुसृत कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राज दरारथ के मन की स्थिति मृत्यु के समय



कार्यक्रम में शामिल श्रद्धालु।

क्या थी उसके मन के ऊपर एक उस दर्पण का दृश्य नजर आ रहा था जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें श्राप दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नेता संपत्ति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं। इस प्रकार की संपत्ति और सुविधाएं मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी दिया करते थे परंतु मर्यादा पुरुषोत्तम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यपरयणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते थे। दुर्भाग्य की बात है कि आज का

नेता ये सुविधाएं तो उन्हें दे रहा है परन्तु उन्हें संस्कार विहीन और कर्तव्यपरायणता विहीन बना रहा है जिसके कारण नागरिक आलसी बनता है। महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि व्यक्ति को जब किसी भी कथा या आयोजन में समीक्षित होना हो तो ना केवल वो सुने बल्कि उस विषय का अध्ययन करें, स्वाध्ययन करें, समीक्षा करें, मंथन करें और फिर चिंतन करें। इस प्रकार वो विषय उसके मन के पटल पर बैठ जाएगा। महाराज

श्री ने हनुमान चालीसा के ऐसे-ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाईं जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सूर और स्वरो का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें।

गजेंद्र गोसाईं ने अपने मुखारबिंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरांत अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारबिंद से गाए और उसमें लोगों को प्रीति किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे। अखिरी दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उसमें लगभग 800 साधकों को डांडिया दिया गया और डांडिया के माध्यम से गापको के माध्यम से साथ में भजन और गुरुदेव के नान्द शब्दों का मिश्रण करके हनुमान चालीसा पाठ के साथ-साथ नृत्य का दृश्य देखने के लायक था। बोधराज सीकरी से कहा गया कि वे समापन को और आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में स्वामी जी का जहां एक और आभार प्रकट किया क्योंकि उन्होंने लोगों को दो दिन निरंतर हनुमान चालीसा के पाठ का संगीतमय तरीके

से पठन करने का अवसर प्रदान किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम न केवल राक्षसों का वध करने के लिए बल्कि पर्यावरण को संतुलित करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। क्योंकि उन्होंने बहुत ही सुंदर कविता पढ़कर सुनाई जिसमें पृथ्वी माँ भगवान विष्णु के पास हाहाकार करती हुई जाती है और राक्षसों के द्वारा किने गए अत्याचार के बारे में बताती है। इस प्रकार अपने मन के उद्वार रखे और अंत में वेद के एक मंत्र जो यज्ञ करते समय प्राय 5 बार उच्चारित किया जाता है। इसमें प्रजा और पशु दो शब्दों का वर्णन है। प्रजा का अभिप्राय संतान से और पशु का अभिप्राय हमारी गीमात से है।

इस प्रकार उस मंत्र को भी बोधराज सीकरी ने सफुरलत व्याख्या करी और अंत में महाराज श्री के चरणों में नतमस्तक हो उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया। इस कार्यक्रम में धर्मद बजाज, ज्योत्सना बजाज, रचना बजाज, शशि बजाज, राजेश गाबा (प्रधान गीता आश्रम), हरीश संगीतज्ञ, रमेश कुमार, ओ.पी कालरा, चंचल, रमेश कामरा, रामलाल श्रोवर, एम.के अरोड़ा, हरविंद कोहली, ओमप्रकाश कर्पूरिया, चूनी लाल शर्मा, रमेश मुंजाल, इलका दास कक्कड़, पुनीत कर्पूरिया, नरेंद्र कर्पूरिया, राजपाल आहूजा, सुभाष श्रोवर एडवोकेट व अन्य जन उपस्थित रहे।

3 महारा हरियाणा
उद्योग सशिक्षण संस्थान 4 अग्रणी कर्म, तारकस शिखरों के तार से जुड़े ने तार

6 विचार क्रान्ति
उत्तम से छद्म युद्ध का
बहुत खतरा

8 हरियाणा
एसडीएम ने उपमंडल कार्यालय का
किराया निरीक्षण

10 फीचर
ऐसे सुदृढ़तापी नविकों
में सिके...

12 हरियाणा
हरियाणा में डिजिटल के लिए शुरू
हेमनगर का प्रयास



राष्ट्रीय दैनिक

संपादनक उत्तर कर्मचारी एस. सी. शिखरकराज जी अर्दिया
4 पत्रक बर्षके दिनांक विचारक एक को, ये जगत् अरु बुद्धि विवेक विचार कुरा को

जगत क्रान्ति



उप : 44 प्रक : 137
जीन्द
सुक्रवार, 19 मार्च, 2023
एक छ | मूल्य ₹2

हरियाणा का सर्वप्रथम लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

E-paper : <http://jagatkranti.co.in>

E-mail : jagatkrantijind@gmail.com

जीन्द (हरियाणा) से प्रकाशित

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

जगत क्रान्ति ► एमके अरोड़ा

गुरुग्राम : ज्योति पार्क स्थित श्रीगीता आश्रम में गीता ज्ञानेश्वर डा. स्वामी दिव्यानंद महाराज के आशीर्वाद से सत्संग के चौथे दिन यानि कि समापन पर पुन-हनुमान चालीसा पाठ मुहिम के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें करीब 800 साधकों ने जहाँ महाराज जी के प्रवचनों का आनंद लिया, वहीं हनुमान चालीसा पाठ का पठन भी किया। स्वामी दिव्यानंद महाराज ने कहा कि साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी



चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि राज दशरथ के मन की स्थिति मृत्यु के समय क्या थी, उसके मन के ऊपर एक उस दर्पण का दृश्य नजर आ रहा

था। जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें श्राप दिया था। उन्होंने बताया कि आज के कई नेता संपत्ति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं। इस प्रकार की संपत्ति और सुविधाएं मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी दिया करते थे परंतु मर्यादा पुरुषोत्तम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यपरायणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते थे।

अमर भारती

करण

एक उम्मीद

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

अमर भारती संवाददाता

गुरुग्राम। स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप फल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत



हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया।

स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला

नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। राजेंद्र गोसाईं ने अपने मुखारविंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मयार्दा पुरुषोत्तम राम न केवल राक्षसों का वध करने के लिए बल्कि पर्यावरण को संतुलित करने के लिए उन्होंने जन्म लिया।

भारत सारथी

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई



भारत सारथी
गुरुग्राम। कल दिनांक 17-05-2023 को स्वामी दिव्यानंद महाराज के पवन और पवित्र अभ्रम जोकि

ज्योति फर्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी की द्वारा बोधराज सीकरी को परस्वी आग्रह किया कि वे जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम अपने

शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वर्तित रह गए हैं और वो आने वाले अतिथि दिन

परम श्रद्धेय स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणाभूज : बोधराज सीकरी

शानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल अभ्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंध में डूबकी लग गई। उसके उपरंत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञास होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण को तरह होना चाहिए जहाँ उसको दर्पण अपनी सज्जाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मान्य होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को सम्पन्न श्रोता बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राज दशरथ के मन की स्थिति मूल्य के समय क्या थी उसके मन के

उपर एक उस दर्पण का दृश्य नजर आ रहा था जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें ब्राह्मण दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नेता संपत्ति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं। इस प्रकार की संपत्ति और सुविधाएं मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी दिया करते थे परंतु मर्यादा पुरुषोत्तम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यप्रयाणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते थे। दुर्भाग्य की बात है कि आज का नेता वे सुविधाएं तो उन्हें दे रहा है परंतु उन्हें संस्कारविहीन और कर्तव्यप्रयाणता विहीन बना रहा है जिसके कारण नागरिक आत्सी बनता है।

महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि व्यक्ति को जब किसी भी कथा या अर्थोपन में समर्पित होना हो तो ना केवल वो सुनने बल्कि उस विषय का अध्ययन करें, स्वाध्यान करें, समीक्षा करें, मंथन करें और फिर निरंतर। इस प्रकार वो विषय उसके मन के पटल पर बैठ जाएगा।

महाराज श्री ने हनुमान चालीसा के ऐसे-ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गावन किया और फिर बोधराज सीकरी के पित्र गजेंद्र गोसाईं जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सूर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें।

गजेंद्र गोसाईं ने अपने मुखारबिंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरंत अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारबिंद से गाए और उसमें लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करें।

अधिरा दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उसमें लगभग 800 साधकों को डोडिया दिया गया और डोडिया के माध्यम से साधकों के माध्यम से साथ में भजन और गुरुदेव के नए-नए शब्दों का मिश्रण करके हनुमान चालीसा पाठ के साथ साथ नृत्य का दृश्य देखने के लायक था।

उसके उपरंत बोधराज सीकरी से कहा गया कि वे समापन की और

आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में स्वामी जी का जहाँ एक और आश्चर्य प्रकट किया क्योंकि उन्होंने लोगों को दो दिन निरंतर हनुमान चालीसा के पाठ का संगीतमय तरीके से पठन करने का अवसर प्रदान किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम न केवल राक्षसों का वध करने के लिए बल्कि पर्यावरण को संतुलित करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। क्योंकि उन्होंने बहुत ही सुंदर कविता पढ़कर सुनाई जिसमें

पृथ्वी माँ भगवान विष्णु के पास हाहाकार करती हुई जाती है और राक्षसों के द्वारा किये गए अत्याचार के बारे में बताती है। तो भगवान विष्णु से उन्हें क्या उत्तर दिया :

पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी, मैं तेरा ताप मिटाऊ हूँ (चाहें ताप का अभिप्राय ग्लोबल वार्मिंग से है) पृथ्वी ए मेरी प्यारी पृथ्वी मैं तेरा ताप मिटाऊ हूँ। दशरथ के चरत राम बनकर अतिशोध अवध में आता हूँ छ भक्तों अब तुम निरन्तर रहो अब तुम्हें ना कोई भय होगा। यह धरणी होगी धरा धाम, धरणी धर का अधिनय होगा छ सुन सकते नहीं कान मेरे अत्याचार पुकार आतीं की, ये पृथ्वी होगी वीरों की

पृथ्वी न होगी हीनों की। इस प्रकार अपने मन के उद्गार रखे और अंत में वेद के एक मंत्र जो पढ़ करती समय प्रमः 5 बार उच्चारित किया जाता है। इसमें प्रजा और पशु दो शब्दों का वर्णन है। प्रजा का अभिप्राय संतान से और पशु का अभिप्राय हमारी गीमाता से है। इस प्रकार उस मंत्र की भी बोधराज सीकरी ने सकुशल व्यवस्था करी और अंत में महाराज श्री के चरणों में नमस्कार हो उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया। उसके बाद प्रसाद वितरित किया गया।

इस कार्यक्रम में धर्मद बजाज, ज्योत्सना बजाज, रचना बजाज, शशि बजाज, राजेश गाबा (प्रधान गीता अभ्रम), हरीश संगीतज्ञ, रमेश कुमार, ओ.जी कलराज, चंचल, रमेश कामरा, रमपाल श्रोत्र, एम.के अरोड़ा, हरविंद कोहली, ओमप्रकाश कथुरिया, नृती लाल शर्मा, रमेश मुंबवाल, द्वारा का दस कक्कड़, पुनीत कथुरिया, नरेंद्र कथुरिया, राजपाल आरूजा, सुभाष श्रोत्र एडवोकेट व अन्य जन उपस्थित रहे। आठ सौर लोगों ने दस-दस बार पाठ करके आठ हजार का आंकड़ा स्पर्श किया। पाठ की कुल संख्या कल एक 8000 रही। 172600 की पहले की संख्या कल की आठ हजार से मिला कर 180600 की रूँ गई।

रण टाइम्स

दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, एनटीआर से प्रकाशित

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई

■ परम श्रद्धेय स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद
 ■ प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी
 राजू गुप्ता
 गुरुग्राम, (रण टाइम्स)। को स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम



आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके।

दैनिक उजाला आज तक

राष्ट्रीय हिंदी समाचार पत्र

बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई परम श्रद्धेय स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद

गुरुग्राम भगत शर्मा उजाला आज तक गुरुग्राम में स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो अग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का

आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रिता बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राज दशरथ के मन की स्थिति मृत्यु के



समय क्या थी उसके मन के ऊपर एक उस दर्पण का दृश्य नजर आ रहा था जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें भ्रातृ दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नेता संपत्ति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं। इस प्रकार की

संपत्ति और सुविधाएं मयादा पुरुषोत्तम राम भी दिया करते थे परंतु मयादा पुरुषोत्तम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यपरायणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते थे। दुर्भाग्य की बात है कि आज का नेता ये सुविधाएं तो उन्हें दे

रहा है परन्तु उन्हें संस्कारविहीन और कर्तव्यपरायणता विहीन बना रहा है जिसके कारण नागरिक आलसी बनता है। महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि व्यक्ति को जब किसी भी कथा या आयोजन में सम्मिलित होना हो तो ना केवल वो सुने बल्कि उस विषय का अध्ययन करें, स्वाध्ययन करें, समीक्षा करें, मंथन करें और फिर चिंतन करें। इस प्रकार वो विषय उसके मन के पटल पर बैठ जाएगा। महाराज श्री ने हनुमान चालीसा के ऐसे-ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज

सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाईं जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरो का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें। गजेंद्र गोसाईं ने अपने मुखारबिंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरांत अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारबिंद से गाए और उसमें लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे। आखिरी दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उसमें लगभग 800 साधकों को डांडिया दिया गया।

दैनिक मेवात

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी

- दैनिक मेवात संवाददाता मुन्नाम । दिनांक 17-05-2023 को स्वामी विष्णुनाथ महाराज के जन्म और संतान अक्षय चौकियोगी पर्व मुहूर्ताम में प्रभु श्री, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परमो ज्ञान कि-चि कि ये जो इतना परतीस के पाठ की मुक्ति अपने शुरू की है उल्लाह आनंद बहुत सारे मायकों ने लिखा और बहुत गरी मायक इस आनंद से जीवन रह गए है और जो आगे वाले जीवन फिर पानी साफा का जो पौधा दिना है उसने भी आनंद के लिए आयेगी व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप करी आस्था में लगभग 800 मायकों ने पहले से एक पंजा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और जन की गंगा में तुम्हकी समाधि। उसके ज्ञान इतना परतीस के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने महान्त में बताया मायक को भिन्नता होती नहीं, मायक का जीवन एक दर्शन की तरह होता परतिपु मायक उसको दर्शन अपनी सफलता का सके व्यक्ति को अपने मन की भिन्नता भी भानुपु होती परतिपु। किन्तु व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से सुनात्मक सुविचारों से सुभावात नहीं करता परतिपु नहीं तो जीवन में नुकसनी होती है। व्यक्ति को मायक कीच चन्द्रा चतिपु। उसके अनुसार कहा ये अराधन योग के दर्शन होते है। उनसे ज्ञान बताया कि राम दर्शन के मन की भिन्नता मुन के साथ कब भी उसके मन के अंग एक तब दर्शन का सुनन कर जो रह जो अब बचन कुमार के महा-विना ने उन्हे साध दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नैस संतान और मुनिमाएं (गुरुजी) को देने में रहे है उन प्रकार जो संतान और मुनिमाएं (गुरुजी) को भी विच करते है। परंतु परतीस पुरपोतय राम उसके सभ संस्कार और कर्मपरंपराया भी अपने जननीको को और प्रक को निरसो



बोधिमा पठन का संगीतमय तरीके से स्वर्ण साधन किया और फिर बोधराज सीकरी के पिता नरेंद्र मोहन जी मिल गिल्ले जी गरीबों में इतना धारणा के पाठ को अपने मूर और स्वर्ण का एक नया रूप दे रहे है उसके मायका से उन्हे कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से इतना परतीस का पठन करें। गरीब मोहन जी अपने मुनिमाएं से अपने मायु साधी से है चार संगीतमय तरीके से पाठ किया। उन्हे परतीस अंत के दो पाठ स्वामी विष्णुनाथ महाराज ने अपने सुवचनदि में गए और उन्हे लोगों को प्रेरित किच कि तुम भी साथ में करेंगे। आधिरी जो इतना परतीस पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उन्हे लगभग 8 मायकों को लड़िया दिया गया और जिनका के साथ में भवन और मुनिदेव के नृ-नृ सधों कर विचय करके इतना परतीस पाठ के साथ-साथ

सकरी के द्वारा किये गए अन्वयान के बारे में बताया है। तो प्रवचन शेष में उन्हे एक उदाहरण : पुनो ए मो परती पुनो, मैं तो आप गिच्छत हूँ (परत आप का अर्थप्राप संप्रकाय करिण से है) पुनो ए मेरी परती पुनो, मैं तो आप पिच्छत हूँ। दर्शन के चर्चा राम बनकर, अनिच्छत अनप में अंत हूँ। परती अब तुम पिच्छत रहे, अब तुम्हें च सोई भय होता यह परती होती या पाप, परती घर का अभिमान होय। मुन यकते नहीं काय मेरे अन्वयिक पुनो अपनी को, मैं पुनो होती सीरी को पुनो व लोगो सेसे को। इस प्रकार अपने मन के उदार रहे और मन ने वेर के एक संभ जो पठ कले समथ प्रायः 5 प्रा उन्वयान किच पाठ है। इससे प्रव और पशु दो सन्दी का नभन है। उन्हा का अर्थप्राप संभन में और पशु का अर्थप्राप हमारी सीमाय में है। इस प्रकार उस संभ की जो

बोधराज सीकरी ने सन्तान परतीस करी और अंत में महाराज जी के चरणों में नमस्कार हो उन्हे आशीर्वाद प्राप्त किया। उसके बाद प्रयाग विचारित किया गया। इस कार्यक्रम में सर्वेद ब्रह्मच, उदीसत ब्रह्मच, रथस ब्रह्मच, सशि ब्रह्मच, गरीस मायक (पुनो पंजा मायक), उदीसत मायक, रमेश कुमार, जी पी कालरा, चंचल, रमेश कामरा, रामलाल शोकर, एन.क अरोड़ा, तारिंद मोहली, सोमप्रकाश काटुरिय, पुनी लाल शर्मा, रमेश मुंडला, इराका राम क.क.द., पुनीत काटुरिय, नरेंद्र काटुरिय, राजकाल आठुका, पुनोम प्रोफ एलबेन्ड म अण जय लक्ष्मीना रो वरत और लोगों ने हज-रथ का पठ करके अंत हन्तु का अर्थप्राप किया। पाठ की पूरा उल्लाह कल तक 8000 परती 172600 को परती की संख्या कल को अंत इतना से निव कर 180600 को हूँ परती।

प्रभु श्रीराम का आदर्श जीवन मानव जीवन के लिए प्रेरणापुंज : बोधराज सीकरी



बोधराज सीकरी द्वारा चलाई जा रही श्री हनुमान चालीसा पाठ की मुहिम नया रंग लाई।

परम श्रद्धेय स्वामी दिव्यानंद महाराज द्वारा मिला बोधराज सीकरी को विशेष आशीर्वाद

गुरुग्राम (एनसीआर टाइम) गुरुग्राम 17 मई को स्वामी दिव्यानंद महाराज के पावन और पवित्र आश्रम जोकि ज्योति पार्क गुरुग्राम में स्थित है, स्वामी जी द्वारा बोधराज सीकरी को परसो आग्रह किया कि ये जो हनुमान चालीसा के पाठ की मुहिम आपने शुरू की है उसका आनंद बहुत सारे साधकों ने लिया और बहुत सारे साधक इस आनंद से वंचित रह गए हैं और वो आने वाले अंतिम दिन यानी सत्संग का जो चौथा दिन है उसमें भी आनंद के लिए आएंगे व पुनः यह कार्यक्रम आयोजित किया जाए। उसके परिणामस्वरूप कल आश्रम में लगभग 800 साधकों ने पहले तो एक घंटा स्वामी जी के प्रवचन का आनंद लिया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाई। उसके उपरांत हनुमान चालीसा के पाठ का पठन किया गया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बताया साधक को जिज्ञासा होनी चाहिए, साधक का जीवन एक दर्पण की तरह होना चाहिए ताकि उसको दर्पण अपनी सच्चाई बता सके। व्यक्ति को अपने मन की स्थिति भी मालूम होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तुलनात्मक दृष्टिकोण से मुकाबला नहीं करना चाहिए नहीं तो जीवन में गड़बड़ी होती है। व्यक्ति को समयक श्रोता बनना चाहिए। उनके अनुसार कथा से अपराध बोध के दर्शन होते हैं। उन्होंने आगे बताया कि राज दशरथ के मन की स्थिति मृत्यु के समय क्या थी उसके मन के ऊपर एक उस दर्पण का दृश्य नजर आ रहा था जब श्रवण कुमार के माता-पिता ने उन्हें श्राप दिया था। इस प्रकार स्वामीजी ने बताया कि आज के कई नेता संपत्ति और सुविधाएं नागरिकों को देने में लगे हैं। इस प्रकार की संपत्ति और सुविधाएं मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी

दिया करते थे परंतु मर्यादा पुरुषोत्तम राम उसके साथ संस्कार और कर्तव्यपरायणता भी अपने नागरिकों को और प्रजा को सिखाते थे। दुर्भाग्य की बात है कि आज का नेता ये सुविधाएं तो उन्हें दे रहा है परन्तु उन्हें संस्कारविहीन और कर्तव्यपरायणता विहीन बना रहा है जिसके कारण नागरिक आलसी बनता है। महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि व्यक्ति को जब किसी भी कथा या आयोजन में सम्मिलित होना हो तो ना केवल वो सुनें बल्कि उस विषय का अध्ययन करें, स्वाध्ययन करें, समीक्षा करें, मंथन करें और फिर चिंतन करें। इस प्रकार वो विषय उसके मन के पटल पर बैठ जाएगा। महाराज श्री ने हनुमान चालीसा के ऐसे-ऐसे रहस्य उजागर किये जो पहले कभी नहीं सुने थे। उन्होंने प्रारम्भ में एक बार हनुमान चालीसा पाठ का संगीतमय तरीके से स्वयं गायन किया और फिर बोधराज सीकरी के मित्र गजेंद्र गोसाईं जो निरंतर पिछले तीन महीनों से हनुमान चालीसा के पाठ को अपने सुर और स्वरों का एक नया रूप दे रहे हैं उसके माध्यम से उन्हें कहा कि अब आप संगीतमय तरीके से हनुमान चालीसा का पाठ करें। गजेंद्र गोसाईं ने अपने मुखारबिंद से अपने मधुर वाणी से 8 बार संगीतमय तरीके से पाठ किया। तदोपरान्त अंत के दो पाठ स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने मुखारबिंद से गाए और उसमें लोगों को प्रेरित किया कि नृत्य भी साथ में करेंगे। आखिरी दो हनुमान चालीसा पाठ का पठन संगीतमय तरीके से उसमें लगभग 800 साधकों को डांडिया दिया गया और डांडिया के माध्यम से गायकी के माध्यम से साथ में भजन और गुरुदेव के नए-नए शब्दों का मिश्रण करके हनुमान चालीसा पाठ के साथ-साथ नृत्य का दृश्य देखने के लायक था। उसके उपरांत बोधराज सीकरी से कहा गया कि वे समापन की और आगे बढ़ें। बोधराज सीकरी ने अपने वक्तव्य में स्वामी जी का जहां एक और आभार प्रकट किया क्योंकि उन्होंने लोगों को दो दिन निरंतर हनुमान चालीसा के पाठ का संगीतमय तरीके से पठन करने का अवसर प्रदान किया। बोधराज सीकरी ने बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम न केवल राक्षसों का वध करने के लिए बल्कि पर्यावरण को संतुलित करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। क्योंकि उन्होंने बहुत ही सुंदर कविता पढ़कर सुनाई जिसमें पृथ्वी माँ भगवान विष्णु के पास हाहाकार करती हुई जाती है और राक्षसों के द्वारा किये गए अत्याचार के बारे में बताती है। तो भगवान विष्णु से उन्हें क्या उत्तर दिया : इस प्रकार अपने मन के उदगार रखे और अंत में वेद के एक मंत्र जो यज्ञ करते समय प्रायः 5 बार उच्चारित किया जाता है। इसमें प्रजा और पशु दो शब्दों का वर्णन है। प्रजा का अभिप्राय संतान से और पशु का अभिप्राय हमारी गौमाता से है। इस प्रकार उस मंत्र की भी बोधराज सीकरी ने सकुशल व्याख्या करी और अंत में महाराज श्री के चरणों में नतमस्तक हो उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया। उसके बाद प्रसाद वितरित किया गया।

इस कार्यक्रम में धर्मेन्द्र बजाज, ज्योत्सना बजाज, रचना बजाज, शशि बजाज, राजेश गावा(प्रधान गीता आश्रम), हरीश संगीतज्ञ, रमेश कुमार, ओ.पी कालरा, चंचल, रमेश कामरा, रामलाल ग्रोवर, एम.के अरोड़ा, हरविंद कोहली, ओमप्रकाश कथूरिया, चूनी लाल शर्मा, रमेश मुंजाल, द्वारका दास कक्कड़, पुनीत कथूरिया, नरेंद्र कथूरिया, राजपाल आहूजा, सुभाष ग्रोवर एडवोकेट व अन्य जन उपस्थित रहे। आठ सौ लोगों ने दस-दस बार पाठ करके आठ हजार का आँकड़ा स्पर्श किया। पाठ की कुल संख्या कल तक 8000 रही। 172600 की पहले की संख्या कल की आठ हजार से मिला कर 180600 को छू गई।

